International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 9; September 2016; Page No. 327-334

भारतीय ग्रामीण परिवेश में अनुसूचित जाति की विधवाओं के सामाजिक–आर्थिक जीवन का एक सूक्ष्म अध्ययनः ग्राम पंचायत गुलौली, तहसील मोहम्मदी, जिला लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश के विशेश सन्दर्भ में

[1] डॉ0 मोहम्मद इसरार खाँ, [2] राम नरेश

[1] सहायक प्रोफेसर, व्यवहारिक एवं क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] शोध छात्र, व्यवहारिक एवं क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
भारतीय ग्रामीण परिवेश मे अनुसुचित जाति की विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ठीक नही है। अधिकांशतया सामाजिक–आर्थिक रुप से उन्हें किसी ना किसी पर निर्भर रहना पड़ता हैं। और वे मजबूरन बाहर के कार्यों को अपनाती है, वहाँ पर विधवाओं का सामाजिक–आर्थिक एंव शारीरिक शोशण किया जाता हैं। इससे उन पर व उनके बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता हैं। ग्रामीण परिवेश में शिक्षा का प्रतिशत कम पाया गया है। समाज विधवाओं का आज भी शोशण कर रहा है। विधवाओं की वर्तमान आयु का औसत 57.63 वर्ष है, निर्धारित विधवाओं का वैध्वय काल का औसत कुल 9.84 वर्ष रहा है तथा विधवाओं की विधवा होने की औसत आयु 48.15 वर्ष रही हैं। साक्षरता दर प्राथमिक आकड़ों के अनुसार 26.31 रही हैं। इन्दिरा आवास योजना का प्रतिशत 5.26 रहा हैं, विधवा पेंशन योजना का प्रतिशत 31.57 हैं, बि0 पी0 ल0 अन्त्योदय कार्ड धारक का प्रतिशत 55.26 हैं। विभाग परिवार पेंशन 60 साला पेंशन योजना का प्रतिशत 10.52 रहा हैं। और विधवाओं की सभी स्त्रोतो से आय रुपये 64,515 प्रति वर्ष हैं। प्रति विधवा पर बच्चों का औसत 3.97 हैं, जिसमे लड़के 2.05 एवं लड़कीयाँ 1.92 हैं। विधवाओं की शादी–शुदा विताई हुई उम्र का औसत 31.84 वर्ष है।

मूल शब्दः भारतीय ग्रामीण परिवेश, दलित विधवाओं का वैध्वय काल या विधवापन, स्वास्थ्य, विधवाओं की आय एवं आय के साधन, सहायता, शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विधवाओं में सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण।

1. प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण परिवेश मे अनुसुचित जाति की विधवाओं का जीवन कठिनाई पूर्वक गुजरता है। उन्हें बाहर के कार्यों में हिस्सा लेना पड़ता है। अपना व बच्चों का खर्च चलाने के लिए सामाजिक कार्यों को अपनाती हैं। भारतीय समाज में अन्धविश्वासों के चलते विधवा को सुबह देखना भी अशुभ मानते हैं। भारतीय समाज में विधवा के प्रति बोल–चाल में अन्तर देखने को मिलता है। सबसे अधिक समाज में जाति–बाद के चलते व धर्म निरपेक्ष के कारण विधवा को अधिक परेशानी होती है। समाज के लोग सोचते है कि यह विधवा हमारी जाति व धर्म की तो है नहीं जो उसकी मदद करें। कुछ धार्मिक लोगों कीी छोटी सोच के कारण विधवाओं को परेशानी होती हे। जो ऊँच–नीच का मार्ग व सम्बन्ध दर्शाता है। लेकिन इस वर्ण–व्यवस्था से विधवाओं को सामाजिक व आर्थिक रूप से सामना करना पड़ता है इससें उनकी आर्थिक व्यवस्था में बदलाव आ जाता है।

बच्चों को सामाजिक व आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ता है। समाज के लोग उन्हें तंग करते है व आर्थिक समस्या उन्हें कम उम्र में मजदूरी या अपना कार्य (खेती) करने पर मजबूर हो जाते है। इससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। स्वास्थ्य सुविधा भी नहीं मिल पाती है। गम्भीर रोगो से ग्रस्त होने से वे कमजोर हो जाते है।

आजादी के बाद विधवाओं के सम्मान के लिए अनेक प्रकार के कानून बनायेगे। उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सुविधओं को संचालित किया गया। कुछ विधवाओं को ही सरकारी सुविधा का लाभ मिल रहा है। शेश विधवाओं के आर्थिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

बॉक्स संख्या 1: एक विधवा की आपबीती

> *मैंने अपने विधवा जीवन को सामाजिक व आर्थिक स्थिति को बड़ी कठिनाई से काटा है। ससुराल से काफी कष्टों का सामना करते हुए व बच्चों ने काफी समय तक तकलीफ उठाई। समाज व ग्रामवासियों ने मेरी बहुत मदद की। आज मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। मैं स्कूल की रसोइया व विधवा पेंशन दोंनो सुविधओं का लाभ ले रही हूँ। मेरे दो बच्चे पढ़ने जाते हैं।*
>
> गुड्डी देवी

आधुनिक जीवन में भारतीय समाज में भी विधवाओं को दवा–कुचाकर व नौकरानी की तरह रखा जाता है। उनसे बाहर के कार्य कराये जाते है। विधवाओं का कहीं–कहीं पर शोशण भी किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बहुत गिरा पाया गया है।

2. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं।

1. दलित विधवाओं की समाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना। दलित विधवाओं के वैधव्य जीवन काल का अध्ययन करना।
2. दलित विधवाओं व उनके बच्चों की शिक्षा का अध्ययन करना।
3. दलित विधवाओं के स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
4. दलित विधवाओं को सरकार द्वारा प्राप्त सहायता का अध्ययन करना।

3. शोध साहित्य अवलोकन

Ethel E. Idialu (2012) ने अफ्रीका की भिन्न–भिन्न समुदाय की विधवाओं से प्राथमिक आँकड़ें प्राप्त किये, विश्लेशण करने पर पाया कि विधवाएँ अमानवीय व्यवहार की शिकार हो जाती है और वह हमेशा दर्द भरा और मानसिक प्रभाव उनको पूरे जीवन भर प्रभावित करता है।

Surkan *et al*. (2014) ने नेपाल के काठमाडु बेली सुरखेत चीतवान ओर केबरी जिलो में विधवाओं के छः समूहों पर ध्यान दिया और उच्च जाति की विधवाओं से सम्बन्धित साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़ों को एकत्रित किये, आँकड़ों का विश्लेशण करने से पता चला कि एक ऐसी महत्वपूर्ण सहायता की जरूरत है कि विधवाओं और उनके बच्चों पर मानसिक प्रभाव को न महसूस होने दें।

Sarla *et al*. (2012) ने भारत के केरल राज्य में प्राथमिक सर्वे के आधार पर विधवाओं से आँकड़ों को एकत्रित करके विश्लेशण किया और पाया कि विधवाओं को दो प्रकार के झटके लगते है एक प्रकार का आर्थिक व शारीरिक और दूसरे प्रकार का (Phenomenon) का झटका लगता है।

Jean Dreze एवं P.V. Shrinivasan (1996) ने उपभोक्ता व्यय के आधार पर राश्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण से ग्रामीण भारत में विधवापन और गरीबी में सम्बन्ध निकाला, उन्होंने प्रति व्यक्ति पूँजी व्यय के आधार पर गरीबी का अनुमान लगाया और पाया गया कि विधवा परिवार की मुखियाये अधिक गरीब है पुरूश परिवार के मुखियाओं से। इसी प्रकार Swain (2005) ने भारत में राश्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 1998–99 के आधार पर विधवाओं से सम्बन्धित प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया और ज्ञात किया कि एक विधवा महिला परिवार की मुखिया के सामने अधिक समस्याँए होती है एक तलाक शुदा महिला से।

Anjuli Chandra (2011) ने विभिन्न प्रकार की सरकारी रिपोर्ट एंव विधवाओं से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य का अध्ययन करके निश्कर्श निकाला कि समाज में विधवाओं की सुरक्षा और समावेशन के लिए सरकारी नीति की आवश्यकता है।

C. Marty एवं J. Dreze (1992) ने उत्तर भारत की जनगणना (1981) के आधार पर विधवाओं से सम्बन्धित प्राप्त ऑकड़ों का विश्लेशण किया और ज्ञात किया कि ग्रामीण क्षेत्र की विधवाओं के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है और अपने बच्चों से कम सर्मथन प्राप्त कर पाती हैं। C. Marty एवं J. Dreze (1995) ने ही भारत की विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया एवं उन्होने इस शोध पत्र में 14 गॉवों में शामिल 7 अलग–अलग राज्यों (बगांल, बिहार,उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, राजस्थान, केरल, आन्ध्र प्रदेश) को शामिल किया है, जिसमें विधवाओं के कार्यो का विश्लेशण किया है एवं समाज के दुश्चक्रों को दर्शाया, और पाया कि विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति की तुलना एक सामान्य औरत से नही कर सकते।

Robert Jenson (2005) ने भारत की महिलाओं के कल्याण, जाति, संस्कृति और स्थिति को दर्शाया हैं, और पाया कि विदुर पूर्नविवाह जरुरी हैं, 11.1 प्रतिशत वर्तमान समय में तलाकशुदा महिलाएँ पुर्नविवाह कर रही हैं। विधुर पुर्नविवाह को भी दर्शाया हैं। इस शोध पत्र में अनुसूचित जनजाति सहित कई वर्गो को शामिल किया हैं।

Jamadar *et al*. (2015) ने विधवाओं के जीवन की गुणवत्ता के आधार पर निश्कर्श निकाला कि विधवा व विधुर पुर्नविवाह के प्रतिशत में वृद्वि हुई हैं।

4. शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र दलित विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर आधारित हैं। अध्ययन के लिए ग्राम बरगदिया व बौधानिया पो0 गुलौली तहसील व थाना मोहम्मदी खीरी जिला लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश को लिया गया हैं। प्राप्त प्राथमिक आकड़ो का संख्किीय विधियों द्वारा विश्लेशण किया गया हैं।

5. विश्लेषण

इस शोध पत्र में ग्रम बरगदिया व बैधनिया पो0 गुलौली, तहसील मोहम्मदी, जिला लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश में विधवाओं के विधवापन, शिक्षा, सभी स्त्रोतो से आय, स्वास्थ्य, विधवा होने की उम्र का अध्ययन, आयु वितरण, दलित विधवाओं के वैधव्य जीवन का औसत, उम्र का औसत, विधवा होने की उम्र का औसत, वर्तमान आयु का औसत, शादी–शुदा विताई हुई उम्र का औसत, लारेन्ज वक्र का निर्माण, सरकार द्वारा सहयता, निवास स्थान, बच्चों का अध्ययन, पति की मृत्यु का कारण, आदि का विश्लेशण किया गया हैं जो प्राथमिक आकड़ो पर आधारित है।

5.1 दलित विधवाओं का वैधव्य काल या विधवापन

वह महिला जिसके पति की मृत्यु हो जाती है। वह विधवा कहलाती है। दलित विधवाओं को सामाजिक–आर्थिक कश्टों का सामना कराना पड़ता है। अपना व अपने बच्चों का पालन –पोशण करना, विधवापन कहलाता है। बच्चों को शिक्षा देने व शादी करने आदि खर्चो के लिए विधवा कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करती है।

विधवापन से महिलाओं के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वे महिलाये जो सामाजिक कार्यो (शुभ कार्य) में शामिल की जाती थी। विधवा होने के बाद वे उन कार्यो में शामिल नहीं हों सकती है। यह उनकी भाग्यवादिता समझों या नसीब का खेल जो वे इस कठिनाई का समना कर रही हैं। समाज की कई सारी आलोचनाओं को सहती है। जैसे अपने पति को खा लिया, अभागन आदि शव्दों से उसे तकलीफ पहुँचते हैं।

5.2 दलित महिलाओं की विधवा होने की आयु का अध्ययन

विधवाओं के विधवा होने की उम्र का अध्ययन निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है। जिसमें उसकी वर्तमान आयु, शादी की उम्र, शादी–शुदा विताई हुई उम्र, विधवा होने की उम्र वैधव्य अवधि।

तालिका 1: विधवाओं के विधवा होने की आयु

विधवा होने की उम्र	विधवाओं की संख्या	प्रतिशत
20.30	5	13.16
30.40	8	21.05
40.50	7	18.41
50.60	10	26.3
60.70	4	10.52
70.80	4	10.52
	N=38	100%

स्त्रोत– सर्वेक्षण

दलित महिलाओ में विधवा होने की उम्र का प्रतिशत 20–30 वर्ष में 13.16 है। 30–40 वर्ष में उम्र का प्रतिशत 21.05 है। 40–50 वर्ष में उम्र का प्रतिशत 18.41 है। 60–70,70–80 वर्ष का प्रतिशत 10.52 है। विधवा होने की उम्र का प्रतिशत 50–60 में सबसे अधिक 26.3 है।

5.3 आयु वितरण

तालिका 2: विधवाओं का वर्तमान आयु वितरण

विधवाओं की वर्तमान उम्र	विधवाओं की संख्या	प्रतिशत
20-30	1	2.63
30-40	8	21.04
40-50	4	10.52
50-60	10	26.3
60-70	7	18.41
70-80	5	13.16
80-90	2	5.26
90-100	1	2.63
	छत्र38	100:

स्त्रोतः सर्वेक्षण

दलित विधवाओं की वर्तमान उम्र का प्रतिशत 20–30, 90–100 वर्ष में 2.63 जोकि सबसे कम है। 30–40 वर्ष में उम्र का प्रतिशत 21.04 है। 40–50 वर्ष में उम्र का प्रतिशत 10.52 है। 60–70 वर्ष का प्रतिशत 18.41 है। 70–80 वर्ष का प्रतिशत 13.16 है। 80–90 वर्ष का प्रतिशत 5.26 है। वर्तमान उम्र का प्रतिशत 50–60 में सबसे अधिक 26.3 है।

5.4 दलित विधवाओं के वैधव्य जीवन का औसत, उम्र का औसत, विधवा होने की उम्र का औसत, वर्तमान आयु का औसत, शादी शुदा विताई हुई उम्र का औसत, यह सर्वेक्षण 2015 के प्राथमिक आकड़ो पर आधारित है।

विधवाओं के वैधव्य जीवन का औसत त्र विधवाओं की कुल उम्र/विधवाओं की कुल संख्या

= 374/38 = 9.84 वर्ष

विधवाओं की उम्र का औसत त्र शादी की उम्र/विधवाओं की कुल संख्या

=620/38 = 16.31 वर्ष

विधवाओं की विधवा होने की उम्र का औसत त्र विधवाओं होने की कुल उम्र/विधवाओं की कुल संख्या

=1833/38 = 48.15 वर्ष

विधवाओं की वर्तमान आयु का औसत त्र विधवाओं की कुल वर्तमान आयु/विधवाओं की कुल संख्या

=2490/38 = 57.63 वर्ष

विधवाओं की शादी शुदा विताई हुई उम्र का औसत त्र विधवाओं की शादी शुदा विताई हुई उम्र/विधवाओं की कुल संख्या

=1210/38

= 31.84 वर्ष

बॉक्स संख्या 2

HDR 2015 के अनुसार भारत में महिलाओं की जीवन प्रत्याशा आयु 69. 42 वर्ष है। वर्तमान में विधवाओं की आयु का समान्तर माध्य 57.63 वर्ष है। इस प्रकार औसतन एक विधवा महिला को 12 वर्ष विधवा होकर बिताने पड़ते है।

5.5 स्वास्थ्य

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधा समय पर उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। शहर के चिकत्सा ग्रामीण क्षेत्र से दूर पड़ जाते हैं। ग्रामीण वहाँ तक पहुँच नहीं पाते, विधवाओं को अधिक तकलीफ होती है। क्योंकि उन्हें देखने के लिए कोई नहीं आता कुछ विधवायें जो उम्रदार है, और बच्चें भी कामयाब है। वे अपनी सुविधा–पूर्वक वहाँ पहुँच जाते हैं। गाँव की वे विधवायें जो आर्थिक रूप से कमजोर, उन्हें गाँव के अनट्रेन्ड डॉक्टरों के पास से ही इलाज करवाना पड़ता है। वे उन विधवाओं से अच्छी रकम वसूल कर लेते हैं।

आकृति 1: उम्र के कारण अस्वस्थ विधवा

स्त्रोतः सर्वेक्षण

आधुनिक काल में सरकार ने अस्पताल मुहैया कराये है। वहाँ भी उचित इलाज नहीं मिल पता है। कभी–कभी सही इलाज से बीमारियाँ खत्म हो जाती है। कुछ बीमारियाँ ऐसी होती है, जिनके इलाज ग्रामीण क्षेत्र में मौजूद नहीं होते है। वे गैर–सरकारी अस्पतालों में मिलते है। विधवायें जो आर्थिक स्थिति की मारी है। वे महँगा इलाज नहीं करा पातीं। इस लिए वे और कमजोरी का शिकार हो जाती हैं। लेकिन आधुनिक काल में बीमारी का स्तर गिर रहा है। हिन्दू धर्म की अनुसुचित जाति (चमार, पाती, धानूक) वाल्मिकि में विधवाओं को आर्थिक समस्या अधिक पायी जाती है। सामान्य वर्ग की विधवाओं की आर्थिक समस्या कम होती है।

अनुसूचित जाति के स्तर से विधवाओं का स्वास्थ्य सम्बन्धी आकड़ों में 38 विधवायें है। जिनमें समान्यता स्वास्थ्य 55.26 प्रतिशत विधवायें पायी गई है। अस्वास्थ्य विधवा केवल 26.31 प्रतिशत ही हैं। जो अलग–अलग बीमारी से ग्रस्त है,जिनमें साँस की बीमारी आत्याधिक पायी गई है। कुछ विधवाओं की बीमारी का कारण उनकी उम्र भी है।

5.6 ग्रामीण परिवेश में दलित विधवाओं को सरकार द्वारा सहायता

सरकार ग्रामीण परिवेश में विधवाओं के लिए अनेक प्रकार की सहयता कर रही है, जैसे विधवा पेंशन, इन्दिरा आवास योजना, राशन कार्ड, आदि योजनायें हैं। भारतीय समाज के दलाल इन सुविधाओं का लाभ उन्हें ही दिलाते है। जिनके पास पर्याप्त साधन हैं। गरीब विधवाओं के साथ ऐसा अधिक पाया जाता है। जिसमें अनुसूचित जाति की सबसे अधिक विधवायें है। क्योंकि अच्छी अच्छी जगहों पर ऊँची जाति के लोग नौकरी करते है वे नहीं चाहते है कि अनुसचित जाति की विधवाओं को किसी प्रकार से सरकारी (लाभ) सुविधा प्राप्त हो। गरीब विधवायें कभी–कभी दलालों को सरकारी सुविधा का लाभ लेने के लिए रिस्वत देती हैं। कभी–कभी लाभ मिल जाता है। अन्यथा नहीं भीं।

आकृति 2: सरकारी सुविधा इन्दिरा आवास योजना

स्त्रोत–सर्वेक्षण

ग्रामीण परिवेश में निम्न सुविधओं का लाभ उठा रही दलित विधवाओं के प्राथमिक आकड़ों के अनुसार मुहैया की गई सुविधायें निम्न प्रकार हैं।

- ग्रामीण क्षेत्र में इन्द्रिरा आवास योजना 5.52 प्रतिशत विधवाओं के पास है।
- विधवा पेंशन योजना के भोगी 31.57 प्रतिशत ही है।
- विभाग व 60 साला पेंशन 10.52 प्रतिशत विधवाओं के पास है।
- विधवाओं के पास राशन कार्ड 55.26 प्रतिशत है। जिसमें वी0पी0एल एवं अन्त्योदय कार्ड है।
- समाजवादी पेंशन योजना केवल 21.63 प्रतिशत विधवाओं के पास है।
- शेश विधवाओं को सरकारी सुविधाओं में किसी भी सुविधा का लाभ नहीं प्राप्त हो रहा है।

5.7 दलित विधवाओं का ग्रामीण क्षेत्र में निवास स्थान

ग्रामीण क्षेत्र में विधवाओं को निवास करने के लिए झोपड़ी आदि देकर उसके जीवन को व बच्चों के भविश्य को अन्धकार मय कर दिया जाता है। अधिक से अधिक कम उम्र की विधवा या 40–50 वर्ष के बीच की विधवाओं के एकल परिवार है।

इससे यह स्पश्ट होता है। कि समाज विधवाओं की किसी प्रकार से सहयता नहीं कर रहा है। केवल उम्रदार विधवायें ही जो 70–100 के बीच की वे अपने बच्चों या रिस्तेदारी के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं।

आकृति 3: एक विधवा का निवास स्थान

स्त्रोतः सर्वेक्षण

तालिका 3: निवास स्थान का प्रकार

एकल परिवार	संयुक्त परिवर	सास–ससूर का परिवार	अन्य
15	22	1	
39.47:	57.89%	2.63%	

स्त्रोतः सर्वेक्षण

ग्रामीण परिवेश में विधवाओं का निवास स्थान का प्रकार निम्नवत् है।

- ग्रामीण क्षेत्र में एकल परिवार का प्रतिशत 39.47 है।
- संयुक्त परिवार जिसका प्रतिशत 57.89 पाया गया है।
- सास–श्वसुर के परिवार में तो विधवा को जीवन काटना जेल बराबर होता है। इसका 2.63 प्रतिशत मिला है।

5.8 दलित विधवाओं के बच्चों की अध्ययन तालिका

ग्रामीण क्षेत्र में सभी विधवाओं के बच्चें हैं, जो उम्रदार है उनके भी बच्चें है। किसी–किसी विधवा के बच्चें नहीं हैं, उन सभी बच्चों का एक विधवा पर औसत ज्ञात किया जायेगा।

विधवाओं के बच्चों का औसत त्र विधवाओं के कुल बच्चें/विधवाओं की कुल संख्या

=151/38 =3.97 **बच्चें**

विधवाओं पर लड़कों का औसत त्र विधवाओं के कुल लड़के/विधवाओं की कुल संख्या

=78/38 /38 =2.05 **लड़कें**

विधवाओं पर लड़कियों का औसत त्र विधवाओं के कुल लड़कियाँ/विधवाओं की कुल संख्या

= 73/38 =1.9 लड़कियाँ

5.9 शिक्षा

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को प्राचीन समय में महत्व नहीं दिया जाता था। अधिकतर लड़कियों को तो समाज के लोग शिक्षा के नाम से वहाँ पर जाने नहीं दिया करते थे। इस अन्धविश्वासनीय भारत समाज में लड़कियों को अशिक्षित रखा जाता था। इसी प्रकार से ग्रामीण की औरतों का साक्षरता स्तर गिरा हुआ है। पहले लड़कियाँ कह देती कि मुझे पढ़ने जाना हे तो बाप–माँ यह कहकर बैठा लेते थे कि तुझे तो चूल्हा–चौंका ही करना है।

चयनित विधवाओं में साक्षरता दर 13.15 प्रतिशत ही है तथा 86.85 प्रतिशत विधवायें निरक्षर हैं।

आधुनिक समय में शिक्षा का महत्व जानते हुए। लड़कियाँ समाज में आगे बढ़ रही है। और साक्षरता दर बढ़ रही है। उससे सामाजिक व आर्थिक स्थिति का सन्तुलन बना रहेगा। और सभी घर शिक्षित होंगे।

5.10 दलित विधवाओं के पतियों की मृत्यु का कारण

ग्रामीण क्षेत्र में सबसे अधिक साँस के मरीज पाये गये है जिनका इलाज सहीं ढंग से नहीं हो पाता है। इस बीमारी का उचित इलाज भी ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं मिल पा रहा है। इसी कारण ग्रामीण जनता को कश्ठ उठाना पड़ता है। साँस की बीमारी का मुख्य कारण कम उम्र से मेहनत कार्य करना, नशा, आदि है। हार्ट अटैक की बीमारी के कुछ लोग शिकार हुये है यह बीमारी आर्थिक कमजोरी आदि से उत्पन्न कठिनाइयों के कारण हो जाती है।

क्षय रोग अथवा टी0 बी0 की बीमारी प्राचीन समय से ही चली आ रही हैं। जिसका कुछ वर्शों पहले इलाज भी नहीं था। ग्रामीण क्षेत्रों में टी0वी0 से अधिक लोग ग्रस्त होते थे। यह बीमारी औरतो के अधिक पायी जाती है। क्योंकि वे खेते में काम करती है, मेहनती

कार्य जो उनके लिए नहीं है। कत्ल होना एक प्राक्रिया हो गई इस प्रकार कि लोग जमीन, जायदाद ओर चल–सम्पप्ति आदि के लिए एक–दूसरे का कत्ल कर देते है। समाज में वाहनों की कमी नहीं है, उससे दुर्घटना का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है।
आधुनिक समय में सबसे खतरनाक बीमारी डायबटीज़ (शुगर) है। केन्सर जिसका इलाज मिलना मुश्किल हो जाता है। इलाज तो चलते है सभी लकिन बहुत कम फायदा होता है। केन्सर तो बिना आपरेशन के उसका कोई इलाज नहीं है। फिर भी मरीज नहीं बचते है। कुछ लोग अनुसूचित जाति के आर्थिक कमजोरी के कारण इलाज नहीं करवा पाते।

तालिका 4: मृत्यु कारण

साँस की बीमारी	फालिज का अटैक	हार्ट अटैक	शुगर	कत्ल	टी0वी0	नशा	दुर्घटना	उम्र व कमजोरी के आदि
26.30%	2.63%	10.52%	10.52%	5.26%	10.52%	15.78%	7.89%	10.52%

स्त्रोतः सर्वेक्षण

यह तालिका संख्या 4 प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है जिसमे साँस की बीमारी का प्रतिशत 26.30 है, फालिज अटैक का प्रतिशत 2.63 है, हार्ट अटैक का प्रतिशत 10.52 है, शुगर का प्रतिशत 10.52 है, कत्ल का प्रतिशत 5.26 है, टी0वी0 का प्रतिशत 10.52 है, नशा करने का प्रतिशत 15.78 है, दुर्घटना प्रतिशत 7.89 है, उम्र व कमजोरी के कारण का प्रतिशत 10.52 है।

5.11 दलित विधवाओं के आय–स्त्रोत

अनुसूचित जाति की विधवाओं में आर्थिक कमजोरी अधिक पायी जाती है। उनकी आय कम होती है। खेती व जीविका के साधन कम होते है। कुछ विधवाओं के आय–स्त्रोत जैसेः– मजदूरी, बकरीपालन, भेड़–पालन, ढ़ेरी, उम्रदार जिधवा के बेटे, या रिस्तेदार आदि इसी प्रकार विधवाओं का जीवन यापन चल रहा है।
भारतीय समाज में सरकार की भी विधवाओं की आय–स्त्रोतो में भागीदारी है। सरकार ने आनेक सुविधयें सचांलित की। जिससे विधवाओं की स्थिति में सुधार आये। और अनेक आर्थिक बदलाव आये। सभी विधवाये अधिक से अधिक सरकारी सुविधा का लाभ ले रही है। कुछ विधवायें सरकार के लाभ से वंचित हैं। सरकार द्वारा प्रदान किये जाने वाले लाभ जैसेः– इन्दिरा आवास योजना, विधवा पेंशन योजना, राशन कार्ड, सामाजवादी पेंशन योजना, आदि।

बॉक्स संख्या 3: एक विधवा की आपबीती

मेरी उम्र 53 वर्ष है। मैं 15/25/1985 को विधवा हुई थी। मेरी कोई सन्तान नहीं है। खेती नहीं है। झोंपड़ी है। आय–स्त्रोत विधवा पेंशन व बकरीपालन है। मैं 29 वर्शो से बकरीपालन कर रही हूँ।

ओमवती

5.12 विधवाओं की आय

विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय का विवरण निम्नांकित तालिका संख्या 5 एवं 6 द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका 5: दलित विधवाओ की सभी स्त्रोतो से आय

सभी स्त्रोतों से आय हजार/लाख	विधवाओं की संख्या	प्रतिशत
20-30	5	13.15
30-40	2	5.26
40-50	8	21.05
50-60	6	12.78
60-70	2	5.26
70-80	5	13.15
80-90	3	7.89
90 से एक लाख	3	7.89
एक लाख से दो लाख	4	10.52
	N=38	100%

स्त्रोत– सर्वेक्षण

दलित विधवाओं में आय 30–40, 60–70 हजार के बीच का प्रतिशत 5.26 है, 20–30, 70–80 हजार के बीच का प्रतिशत 13.15 है, 80–90, 90–1 लाख के बीच का प्रतिशत 7.89 है, एक लाख से दो लाख का प्रतिशत 10.52 है, 50–60 हजार का प्रतिशत 12.78 है। 40–50 हजार का प्रतिशत 21.05 है। जिसमे सबसे कम आय ; हजारो में द्ध 30–40, 60–70 में आने वाली विधवाओं की हैं, जिसका प्रतिशत 5.26 है। सबसे अधिक आय में आने वाली विधवाओं का प्रतिशत 21.05 है, और विधवाओं की संख्या 8 जोकि अधिक है।

तालिका 6: दलित विधवाओं की सभी स्त्रोतो से आय

आय हजारों में (cf)	आवृत्ति (f)	संचयी आवृत्ति (cf)	मध्य मूल्य (m.v)	मध्यकालपित माध्य A=112.5	किग	किग²
0-25	5	5	12ण्5	-100	-500	50000
25-50	10	15	37ण्5	-75	-750	56250
50-75	13	28	62ण्5	-50	-650	32500
75-100	6	34	87ण्5	-25	-150	3750
100-125	1	35	112ण्5	0	0	–
125-150	2	37	137ण्5	+25	+50	1250
150-175	0	37	162ण्5	+50	0	0
175-200	1	38	187ण्5	+75	+75	5625
	N=38				$\sum fdx=-1925$	$\sum fdx^2=149375$

स्त्रोतः सर्वेक्षण

विधवाओं की औसत आय = 62,063 रुपये दलित विधवाओं की सभी स्त्रोतो से आय का समान्तर माध्य, मध्यिका, प्रमाप विचलन की गणना

समान्तर माध्य = 61.84 हजार

माध्यिका = 57.69 हजार

प्रमाप विचलन = 36.94 हजार

दलित विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय का समान्तर माध्य 61.84 हजार है। मध्यिका 57.69 हजार है और प्रमाप विचलन 36.94 हजार है।

5.13 लारेन्ज वक्र

परिशिष्ट संख्या 8.2 में बने हुए लारेन्ज वक्र का निरीक्षण करने से यह कहा जा सकता है कि दलित विधवाओं की आय के वितरण में विधवाओं की संख्या की अपेक्षा असमानता पायी गई है।

तालिका 7: दलित विधवाओं की वर्तमान उम्र

विधवाओं की उम्र	आवृत्ति	संचयी आवृत्ति	मध्य मूल्य	कल्पित माध्य A=65	F.dx	Fdx.dx=fdx^2
20-30	1	1	25	.40	-40	1600
30-40	8	9	35	.30	-240	7200
40-50	4	13	45	.20	-80	1600
50-60	10	23	55	.10	-100	1000
60-70	7	30	65	0	0	0
70-80	5	35	75	10	50	500
80-90	2	37	85	20	40	800
90-100	1	38	95	30	30	900
	N=38				[-460 + 120] = -340	13600

स्त्रोत– सर्वेक्षण

चयनित विधवाओं की वर्तमान उम्र का समान्तर माध्य, मध्यिका, प्रमाप विचलन की गणना

चयनित विधवाओं की वर्तमान उम्र का समान्तर माध्य त्र 56ण्05 वर्ष
चयनित विधवाओं की वर्तमान उम्र की मध्यिका त्र 56 वर्ष
चयनित विधवाओं की वर्तमान उम्र का प्रमाप विचलनत्र 16ण्66 वर्ष
विधवाओं की वर्तमान उम्र का समान्तर माध्य 56.05 वर्ष तथा माध्यिका 56 वर्ष है। प्रमाप विचलन का मान 16.66 वर्ष है।

6. निष्कर्ष

ग्राम पंचायत गुलौली में विधवाओं की चयन के आधार पर विधवाओं की संख्या 38 पायी गई है वे सभी विधवायें अनू0 जाति की हैं। जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई है। चयनित क्षेत्र की साक्षरता दर प्राथमिक आकड़ों के अनुसार 13.15 प्रतिशत है, गम्भीर रूप से अस्वास्थ्य विधवायें 26.31 प्रतिशत है जिनके साँस की बिमारी अधिक पायी गई है। विधवा होने का कारण नशा, दुर्घटना, बिमारी आदि हैं। दलित विधवाओं को सरकारी सुविधाओं का विवरण निम्नवृत हैं।

तालिका 8: दलित विधवाओं को सरकारी सुविधाओं का विवरण

लाभार्थी प्रतिशत	योजना का नाम
5.26	इन्दिरा आवास योजना,
31.57	विधवा पेंशन योजना,
55.26	बी0पी0एल ध अन्त्योदय कार्ड,
10.52	विभागीय परिवार पेंशन ध 60 साला पेंशन योजना,
सभी स्त्रोतों से औसत आय रुपये 64,515 प्रति वर्ष है।	

7. दलित विधवाओं के समाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण हेतु सुझाव

1. यदि किसी दलित विधवा स्त्री की आर्थिक स्थिति ठीक नही है। व कम उम्र और छोटे बच्चें भी हैं, उसके बच्चों का भविश्य उज्ज्वल बनाने के लिए विधवा पुर्नविवाह हेतु सामाजिक एंव सरकारी प्रोत्साहन देना चाहिए।
2. सरकार को दलित विधवाओं के लिए उचित योजनायें पहुचानी चाहिए।
3. समाज में दलित विधवाओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जानी चाहिए।
4. दलित विधवाओं को निजी रोजगार, कारोबारी लोन, दक्षता विकास, मनोवैज्ञानिक विमर्श आदि की सुविधा होनी चाहिए।

8. परिशिष्टः सांख्यिकीय परिकलन

8.1 दलित विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय का परिकलन

विधवाओं की आय का औसत

= विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय/विधवाओं की कुल संख्या

= [18000. 48000. 15600. 180000. 36000. 42000. 41000. 15000. 72000. 36600. 86000. 72000. 43000. 84000. 43000. 60000. 68000. 18600. 48000. 144000. 147000. 103000. 19600. 96000. 73000. 72000. 98000. 51600. 86000. 51600. 41800. 58500. 51600. 73000. 45000. 65000. 96000. 51600] / [38]

= 2358400ध38

=62,063 रु0 प्रति वर्ष

समान्तर माध्य = $A \pm \frac{\sum fdx}{n}$

= 112.5-1925/38=50.66

= 112 – 50.66

= 61.84 हजार

मध्यिका $M = L1 + \frac{i}{f}(m - c)$

$m = \frac{n}{2} = \frac{38}{2} = 19$

$= 50 + \frac{25}{13}(19 - 15)$

$= 50 + \frac{25*4}{13}$

=50 + 7.96

= 57.69 हजार

प्रमाप विचलन $= \sqrt{\sum \frac{fdx2}{n} - (\sum \frac{fdx}{n})2}$

$= \sqrt{\frac{149375}{38} - \left(\frac{1925}{38}\right)2}$

$= \sqrt{3930.92 - (50.66)_2}$

$= \sqrt{3930.92 - 2566.22}$

$= \sqrt{1364.7}$

= 36.94 हजार

दलित विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय का सामान्तर माध्य 61.84 हजार है जिसमें मध्यिका त्र 57.69 हजार है। और प्रमाप विचलन 36.94 हजार है।

8.2 दलित विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय का लारेन्ज व्रक का परिकलन

तलिका : विधवाओं की सभी स्त्रोतों से आय का लारेन्ज व्रक का निर्माण

आय हजारों में	आय कामध्य–मूल्य	संचयी योग	संचयी प्रतिशत	विधवाओं की संख्या	संचयी आवृत्ति	संचयी प्रतिशत
0.25	12.5	12.5	3.57	5	5	13.16
25.50	37.5	50	14.28	10	15	39.47
50.75	62.5	100	28.57	13	28	73.68
75.100	87.5	150	42.85	6	34	89.47
100.125	112.5	200	57.14	1	35	92.10
125.150	137.5	250	71.42	2	37	97.36
150.175	162.5	300	85.71	0	37	97.36
175.200	187.5	350	100	1	38	100

स्त्रोत– सर्वेक्षण

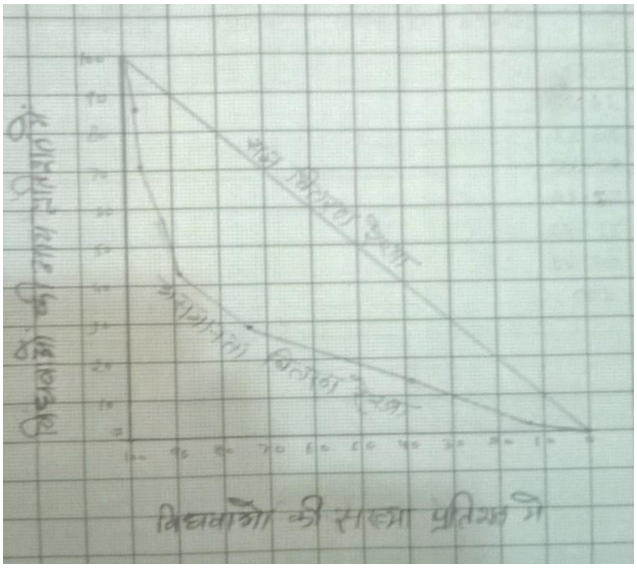

आकृति 4: लारेन्ज वक्र [ekin.M 1 cm = 10%]

चित्र में वने हुए वक्र का निरीक्षण करने से यह कहा जा सकता है कि विधवाओं की आय का वितरण विधवाओं की संख्या की अपेक्षा असमानता पायी गई है।

8.3 दलित विधवाओं की वर्तमान उम्र का परिकलन

समान्तर माध्य = A ± $\frac{\sum fdx}{n}$

=65- $\frac{340}{38} = 8.95$

$= 65 - 8_{.95}$

$= 56.05$ वर्ष

माध्यिका M = $L_1 + \frac{i}{f}(m - cf)$

m=n/2 =38/2=19

$= 50 + \frac{10}{10}(19 - 13)$

=50 $\frac{10*6}{10}$

=506

= 56 वर्ष

प्रमाप विचलन $= \sqrt{\sum \frac{fdx2}{n} - (\sum \frac{fdx}{n})2}$

$= \sqrt{\frac{13600}{38} - \left(\frac{-340}{38}\right)2}$

$= \sqrt{357.90 - (8.95)2}$

$= \sqrt{357.90 - 80.05}$

$= \sqrt{277.85}$

=16.66 वर्ष

दलित विधवाओं की वर्तमान उम्र का समान्तर माध्य 56.05 वर्ष है। माध्यिका 56 वर्ष और प्रमाप विचलन 16.66 वर्ष है।

9. सन्दर्भ सूची

1. I Dialu EE. The Inhuman Treatment of Windows in African Communities. Department of Vocational and Technical Education, Ambrose Alli University, Ekpoma, Edo State, Nigiria, 2012.
2. Mohindra KS, Haddad S, Narayana D. Debt, Shame, and Survival: Becoming and Living as Widows in Rural Kerala, India. BMC Inter-Natioanl Health and Rights 2012. 12/28 htt://wwwhiomedcentral.com/472.698x/12/28.
3. Surkan JP, Broaddus TE, Shresha A, Thapa L. Non Disclosure of Widowhood in Nepal: Implications for

Women and their Children. Global Public Health. 2014. htt// dx.dol org/10/1080 /17441692/939686.
4. Dreze J, Srinivasan PV. Windowhood and Poverty in Rural India: Some Inferences from Household Survey Data. Indira Gandhi Indtitute of Dovelopment Research Gen. Vaidya Marg, Gorgaon (East), Bombay 400065, India. 1996-1997; 55-217234.
5. Chandra A. Vulnerability of Widows in India: Need for Inclusion. 2011; 1(1):124-132. angull crediffrraill11chandra.anijuligmail.com
6. Swain P, Pillai KV. Living Arrangements among Single Mother in India. Canadian Studies in Population, New. Delhi India. 2005; 32(1):53-67.
7. Chen M, Dreze J. Widows and Health in Rural North India. Economic and Political Weekly. 1992, 24-31.
8. Chen M, Dreze J. Recent Research on Widows in India; Workshop and Conference Report, Economic and Political Weekly, 1995, 30.
9. Jenson RT. Cast, Culture, and the Status and Well-Being of Widows in India. In Analyses in the Economics of Aging, Auther/Editor: David A. Wise. University of Chicago Press. 2005. ISBN: 0-226-90286-2. URL:http//www.nber.org/chapters/c10366.
10. Jamadar C, Melkeri SP, Holkar A. The Internation Journol of Indian Psychology. 2015; 3(1-10). (e)|ISSN:2349-3429, DIP: CO3171V3I12015.